

**MAHARASHTRA STATE COUNCIL OF EXAMINATION, PUNE**

Government Commercial Certificate Examination

**6 JULY, 2018**

[Time : 14-00]

(Total Marks for Sections I and II : 100)

**HINDI TYPEWRITING**

(40 Words Per Minute)

**SECTION - II**

(Time Allowed : 7 Minutes)

हिंदी टंकलेखन

(४० शब्द प्रति मिनट)

विभाग - २

(समय : ७ मिनट)

सूचना : निम्नांकित गद्यखंड को दोहरे अंतर में टंकलिखित करें। गद्यखंड को दुबारा टंकलिखित न करें। बायीं ओर १५ स्पेस का हाशिया (मार्जिन) छोड़िए।

[अंक : ४०]

तुम हँसते रहते हो या रोते रहते हो। यदि रोते हो, तो जरा उस बड़े शीशे में देखो, कैसी सूरत है। ऐसी कि देखनेवाले हँस दें। यदि तुम रोना नहीं पसंद करते, बल्कि गुलाब के फूल की तरह हँसते रहते हो तो वाह, क्या कहना है। जरा फिर देखो न उस शीशे में, इस झाँकी को तो आँखों में भर लेने को जी चाहता है। यह हँसता हुआ प्यारा मुखड़ा छोड़कर भला रोनी सूरत कौन पसंद करेगा ?

स्वामी रामतीर्थ प्रायः लोगों से कहा करते थे, “ए ईश्वर के प्यारे बच्चों, सदा हँसते रहो। रोते बालक से कोई पिता खुश नहीं रहता, उसी तरह उदास और मनहूस लोगों से परम पिता भी प्रसन्न नहीं रह सकता।” एक अंग्रेज कवि कहता है, “जिन वृक्षों में कलियाँ नहीं होतीं, उनमें कभी फल नहीं लगते।” अर्थात् जिन मनुष्यों के होठों पर कलियों की तरह हँसी नहीं खिलती, वे कभी अपने जीवन में सफलता नहीं प्राप्त कर सकते।

इसीलिए जापानी लोग अपने बच्चों को सदा यही शिक्षा दिया करते हैं कि चाहे तुम्हारे ऊपर कैसी भी विपत्ति क्यों न आए, उसे बाहर प्रकट होने न दो। बल्कि ऐसे समय में भी तुम्हारा प्यारा मुखमंडल चाँद की तरह हँसी से दमकता रहे। जापानी लोग उदास रहना अपने लिए अपमान की बात समझते हैं। उदासी मुर्दों की निशानी है और प्रसन्नता जिंदा दिलों की। जापानी अपने को मुर्दा नहीं, जिंदादिल समझते हैं। वे घोर विपत्ति का भी हँसते हुए स्वागत करते हैं, इसी में वे अपनी-शूरता समझते हैं। उनकी ओर देखो - वे दुख-सुख दोनों में खिलखिलाकर हँसते हैं। जापानी अपने परम आत्मीय की मृत्यु पर भी रोता नहीं, यद्यपि उसका हृदय व्यथा से चूर-चूर हुआ जाता है, परंतु वह अपने दुख से दूसरे को दुखी नहीं करता। किसी जापानी को हँसता हुआ खड़ा होगा।